आलेख

डा. आलोक शर्मा, सह-प्राध्यापक
डा. शिवानी कटोच, सहायक प्राध्यापक
पशु चिकित्सा एवम् पशुपालन प्रसार विभाग,
चौ. सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर- 176 062

प्रसार पत्रक क्रमांक-11

पशुओं की महामारी : रिडँरपैस्ट रोग का उन्मूलन ही समाधान है

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

लक्षण

पशु की छूत लगने के बाद उसे 9 दिन में रोग के लक्षण उत्पन्न हो जाते है । इस रोग के लक्षण 3 अवस्थाओं में होते है जिनका वर्णन नीचे दिया गया है ।

(क) बुखार की अवस्था: सबसे पहले पशु को 104 से 107 डिग्री फार्नहाइट तक बुखार हो जाता है जो कि 2 से 4 दिन तक रहता है । पशु सुस्त हो जाता है जुगाली नहीं करता, खाना भी छोड़ देता है । कब्ज होती है । दुधारू पशुओं में दूध सूख जाता है, व खाँसी होती है । आँखों व नाक से एक तरल पदार्थ निकलता है।

(ख) मुंह में छाले पड़ने की अवस्था : यदि रोगी पशु का मुंह खोल कर देखें तो होठों के भीतरी और मसूड़ों पर और जीभ के नीचे छाले दिखाई पडते है । आरम्भ में ये छाले सूई की नोक के समान होते है किन्तु बाद में बढ़कर से घाव की शक्ल में आ जाते है । इनसे खून बहता है । इन घावों में आटे की छानन की तरह का पदार्थ लगा हुआ दिखाई पड़ता है । यह अवस्था लगभग दो दिन रहती है। कुछ रोगियों में छाले नहीं होते । इस अवस्था में पशु के शरीर पर भी छाले हो सकते हैं।

(ग) दस्त लगने की अवस्था : बीमारी के चौथे या पांचवे दिन दस्त लग जाते है। शुरू में गोबर नर्म आता है, फिर दस्त लग जाते है जोकि इतने बढ़ जाते है कि पशु पिचकारी की तरह दस्त करता है । गोबर में खून, आँव तथा छिछड़े आते है और यह बहुत बदबूदार होता है । दस्त लगने के पश्चात बुखर उतर जाता है । कई बार तापमान सामान्य से भी कम हो जाता है और आँखें अन्दर को घुस जाती है । पशु बहुत ही कमजोर हो जाता है और हडिडयों का ढांचा बन जाता है । गाभिन पशुओं में गर्भपात हो जाता है ।

रोग के लक्षण दिखाई देने के पश्चात 4 से 20 दिन में पशु की मृत्यु हो जाती है । जो पशु ठीक हो जाते है वे बहुत दिनों तक कमजोर रहते है और उनका उत्पादन बहुत ही कम हो जाता है ।

इलाज

1. विषाणु से उत्पन्न होने के कारण इस रोग का विशेष इलाज नहीं है । इसीलिए इसके इलाज की बजाय बचाव पर अधिक ध्यान देना बहुत आवश्यक है । इलाज हमेशा पशु-चिकित्सक की सलाह से ही कराना चाहिऐ ।
2. मुंह में हुए छालों को लाल दवाई (पोटाशियम परमैनगनेट) के 0.1 प्रतिशत घोल से धोना चाहिए ।
3. चावलों का माँड खूब पिलाना चाहिए ताकि कुछ आहार पशु को मिलता रहे ।

रोग फूटने पर क्या करें ?

राष्ट्रीय रिंडरपेस्ट उन्मूलन कार्यक्रम के लागू होने के बाद रोग पर लगभग नियन्त्रण लिया गया है । फिर भी पशु पालकों के लिए निम्न जानकारी बहुत उपयोगी होगी ।

- यह एक बहुत ही भयानक छूत का रोग है जो बहुत तेजी से फैलता है इस लिए तुरन्त ही अपने निकटतम पशु चिकित्सालय के पशु-चिकित्सक को रोग फूट पड़ने की सूचना देनी चाहिए । इसके लिए ग्राम पंचायतों के सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है ।
- बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें । बेहतर होगा यदि उनको गांव से बाहर रखा जाए और वहां पर ही उनके खाने और पीने का प्रबन्ध हो । उनकी देखभाल के लिए अलग से आदमी रखें जायें जो उन्ही की देखभाल करें और वह व्यक्ति स्वस्थ पशुओं के पास न जाए ।
- स्वस्थ पशुओं को इस रोग का टीका लगवा देना चाहिए । यह टीका मुफ्त लगता है । एक बार टीका लग जाने के पश्चात यह रोग 3 वर्ष तक नही आता है ।
- पशु-चिकित्सक की राय के अनुसार बीमार पशुओं का इलाज कराना चाहिए ।

- जिन पशुओं की इस रोग से मृत्यु हो गई हो उनको गाँव के बाहर गहरा गढढ़ा (2 से 2.5 मीटर) खोद कर दबा देना चाहिए । दबाते समय पशु के ऊपर व नीचे चूना डाल देना चाहिए ।
- पशु-घर की अच्छी प्रकार से सफाई कर देनी चाहिए ।
- मेले से खरीदे गये पशुओं को एक सप्ताह के लिए दूसरे पशुओं से अलग रखना चाहिए ।

रिडँरपैस्ट रोग से बचाव के टीके

रिडँरपैस्ट रोग के दो प्रकार के बचाव टीके होते हैं :

1. **गोट टिशु वायरस वैक्सीन** : यह टीका मैदानों में रहने वाले देशी पशुओं के लिए है । इस टीके की सिफारिश पहाड़ी क्षेत्रों, विदेशी तथा संकर प्रजनन से उत्पन्न हुए पशुओं के लिए नहीं की गई है । गाभिन पशु जो प्रसूति के निकट हो तथा दूध देने वाले पशुओं में भी इस टीके का प्रयोग नहीं करना चाहिए । ऐसे पशु जिन की आयु 6 महीने से कम हो उनके लिए भी इसको सिफारिश नहीं की गई है।

2. **टिशु कल्चर वैक्सीन** : यह टीका विदेशी संकर प्रजनन से उत्पन्न हुए पशुओं, पहाड़ी क्षेत्रों के पशुओं तथ ऐसे जो प्रसूति के निकट हो या दूध देते हो उनमें बिना किसी हानि के प्रयोग किया जा सकता है । एक दिन की आयु के बछड़े-बछड़ियों में भी इस टीके का प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु दूसरा टीका केवल 6 से 8 महीने की आयु होने पर लगाना आवश्यक है । बड़ी आयु के पशुओं में दूसरा टीका 3 से 4 वर्ष के पश्चात लगवाना आवश्यक है ।

पशुओं की महामारी : रिडँरपैस्ट रोग : उन्मूलन ही समाधान है

इस रोग को ''पशुओं की महामारी'' कहा जाता है । अग्रेजी में इस रोग को रिडँरपैस्ट कहते है । यह फटे खुर वाले पशु जैसे गाय, भैंस, बकरी और जुगाली करने वाले दूसरे पशुओं और सुअरों में होने वाला एक भयानक छूत का रोग है । जो पशु बीमार हो कर इस रोग से बच नही जाते है उनकी उत्पादन तथा कार्य क्षमता बहुत ही कम हो जाती है । संवर प्रजनन से उत्पन्न हुए और दूसरे देशो से मंगाए गए पशु तथा पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले पशु इस बीमारी का शिकार शीघ्र हो जाते है । आजकल भारत सरकार ने इस रोग के उन्मूलन का बहुत बड़ा कार्यक्रम शुरू कर रखा है । इस लिए इस रोग के बारे में पशु पालकों को उचित जानकारी होना और भी आवश्यक हो गया है ।

कारण : यह बीमारी एक प्रकार के विषाणू (वायरस) से उत्पन्न होता है, जिसे सामान्य सूक्ष्म दर्शी यन्त्र से भी नहीं देखा जा सकता ।

रोग कैसे फैलता है ?

आमतौर पर यह बीमारी रोग की छूत से प्रभावित किसी पशु के आने से फैलती है। इस रोग के विषाणु बीमार पशु के शरीर से गोबर, पेशाब, लार, आँखों और नाक से निकलने वाले स्त्राव के रास्ते निकल कर चारे और पानी में मिल जाते हैं । जो पशु उस दूषित चारे या पानी को खा/पी लेते है, उन्हें यह रोग हो जाता है । बीमार पशु की देखभाल करने वाले मनुष्य के कपड़ों और पैरों से स्वस्थ्य पशुओं को इस रोग की छूत लग जाती है । दूषित चारा या घास-फूस हवा में उड़ कर स्वस्थ्य पशुओं के सर्म्पक में आने से उन्हे ये रोग लग सकता है । सर्दी इस रोग के विषाणुओं को सुरक्षित रखती है, जबकि धूप से ये शीघ्र ही नष्ट हो जाते है।